सूविचार



झड़सान का वजन हर बार...तौलने से ही नहीं..... कई बार बोलने से भी पता चल जाता है.....

राजेश चौहान

संपादकीय

धर्म और अधर्म का युद्ध या संविधान और सत्ता की लड़ाई

उत्तर प्रदेश में 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव की राजनीतिक बिसात अभी से बिछने लगी है। जिस तरह के राजनीतिक और सामाजिक हालात बन रहे हैं, उन्हें देखकर महाभारत के युद्ध की याद आना स्वाभाविक है। महाभारत में कौरवों और पांडवों के बीच सत्ता, अधिकार और धर्म की लड़ाई थी। युद्ध जीतने के लिए चक्रव्यूह रचे गए, अभिमन्यु को घेरकर मारा गया और धर्मराज युधिष्ठिर के मुख से निकले आधे-अधूरे सत्य ने युद्ध की दिशा को प्रभावित किया। आज उत्तर प्रदेश की राजनीति में भी कुछ ऐसे ही दांव-पेच दिखाई देने लगे हैं। हालांकि इस तुलना को राजनीतिक घटनाओं की वास्तविक स्थिति को देखते हुए तुलना के रूप में समझना चाहिए। धर्म और दूसरे को अधर्म का प्रमाण नहीं माना जा सकता है। वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों में विपक्ष मतदाता सूची में कथित गड़बड़ियों और चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली को लेकर सवाल उठा रहा है। उसका आरोप है, लोकतांत्रिक प्रक्रिया का चुनाव आयोग पालन नहीं कर रहा है। चुनाव आयोग भाजपा के पक्ष में काम कर रहा है, जिससे चुनाव की निष्पक्षता प्रभावित हो रही है। दूसरी ओर सत्ता पक्ष विपक्ष की एकजुटता को चुनौती देने के लिए राजनीतिक रणनीतियां अपना रहा है। सवाल यह है कि क्या चुनाव जनता के वास्तविक मुद्दों पर लड़ा जाएगा या एक-दूसरे को राजनीतिक रूप से कमजोर करने के लिए नए चक्रव्यूह एवं साजिश रची जाएंगी? उत्तर प्रदेश में मुस्लिम और दलित मतदाताओं का समर्थन हासिल करने के लिए समाजवादी पार्टी ने पीडीए बनाया है। समाजवादी पार्टी की रणनीति को चुनौती देने के लिए चंद्रशेखर आजाद और असदुद्दीन ओवैसी की राजनीतिक सक्रियता उत्तर प्रदेश के चुनाव में नए समीकरण बना सकती है। मायावती की चुनावी सक्रियता भी इन समीकरणों को प्रभावित कर सकती है। इन दलों और नेताओं को भाजपा की बी टीम बताने जैसे आरोप भी राजनीतिक बहस का हिस्सा हैं। ऐसे आरोपों का फैसला अंततः मतदाता अपने विवेक से करेगा। विपक्षी मतों का बंटवारा किसे लाभ पहुंचाएगा, यह इस चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

दूसरी ओर धार्मिक राजनीति का स्वर भी तेज होता दिखाई दे रहा है। भगवान राम और भगवान कृष्ण के नाम पर राजनीतिक और धार्मिक विमर्श के बीच बाबा रामदेव और धीरेंद्र शास्त्री के विवाद ने एक नई बहस को जन्म दिया है। धर्म के नाम पर भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने, साधु-संतों और बाबाओं के बीच आरोप-प्रत्यारोप और वैचारिक टकराव दिखाई दे रहे हैं। राम मंदिर निर्माण, चंदे को लेकर उठे विवाद, युवाओं के असंतोष और जेन-जी से जुड़े आंदोलनों के बीच हिंदुत्व कमजोर होता हुआ दिख रहा था। समाज के भीतर अलग-अलग विचारधाराएं, अलग-अलग आस्थाएं और हिंदुओं के कई समूह सक्रिय हैं। ऐसे वातावरण में धार्मिक भावनाओं का चुनावी इस्तेमाल हिंदुत्व की सामाजिक एकता के लिए चुनौती बन सकता है। इस पूरे राजनीतिक संघर्ष का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष संविधान है। भारत का लोकतंत्र किसी धार्मिक ग्रंथ की व्याख्या या किसी राजनीतिक दल की इच्छा से नहीं, बल्कि संविधान और कानून से संचालित होता है। महाभारत में धर्म की स्थापना के लिए युद्ध हुआ था। वर्तमान में लोकतंत्र की रक्षा, आधुनिक भारत में संविधान के अनुसार न्याय, समानता, स्वतंत्रता और संवैधानिक अधिकार इस लड़ाई में शामिल हैं। चुनाव आयोग की निष्पक्षता, मतदाता के मत का सम्मान, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और संस्थाओं की जवाबदेही लोकतंत्र के मूल आधार हैं। 2027 का उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन या सत्ता बचाने की लड़ाई नहीं है। उत्तर प्रदेश का चुनाव तय करेगा कि केंद्र में भविष्य में किसकी सरकार बनेगी। राजनीति, धर्म के नाम पर समाज को बांटेगी या संविधान के आधार पर सबको समान अधिकार देगी। लोकतंत्र में जनता ही निर्णायक होती है। महाभारत युद्ध के बाद पांडवों को विजय तो मिली, लेकिन दोनों पक्षों ने अपनों को खोया। आज भारत को ऐसे चुनाव की जरूरत है, जिसमें जीत किसी भी दल या गठबंधन की हो लेकिन लोकतंत्र मजबूत हो। इस चुनाव में लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक सद्भाव और संवैधानिक मर्यादाओं की हार नहीं होनी चाहिए। असली धर्म सत्ता प्राप्त करना नहीं, बल्कि सत्ता का उपयोग जनकल्याण और न्याय के लिए करना है। 2027 के उत्तर प्रदेश चुनाव का यही लक्ष्य सत्ता पक्ष ?र विपक्ष के बीच होना चाहिए।

मंत्री जी का जीव

व्यंग्य

तीसरी आँख



यमलोक में उस दिन बड़ी अफरा-तफरी थी। यमलोक में सिस्टम अपडेट हो चुका था। अब यमराज जी त्रिशूल या जीव पाश नहीं, टैब पकड़े रहते थे। चित्रगुप्त जी के पास बहीखाता नहीं, एक्सेल शीट थी। और यमदूतों के हाथ में फंदा नहीं, क्यूआर कोड वाला स्कैनर था। यमराज जी जमानत जब्त उम्मीदवार के तारक पत्र अपने सिंहासन पर उकड़ूँ बैठे थे, सामने चित्रगुप्त जी अपना लैपटॉप खोले बैठे थे और दो यमदूत हाथ बाँधे अपराधी की तरह खड़े थे। उसी यमलोक में एक दिन अलार्म बजा – एक जीव मिसिंग है। यमराज ने स्क्रीन की ओर देखा – नाम था : माननीय मंत्री जी । मृत्यु की तारीख : चौदह दिन पहले। स्टेटस : जीव नॉट रिसीव्ड। दो यमदूत हाँफते हुए आए। 'महाराज, हमने तो प्राण निकालकर 'यम-ऐप' पर अपलोड भी कर दिया था, पर अपलोड होते-होते जीव ने 'डिलीट फॉर एवरीवन' दबा दिया। ' 'कहाँ?' ' 'पता नहीं महाराज, हमने यम-सीसीटीवी चेक किया, क्लाउड में बैकअप भी नहीं है। एक यमदूत बोला - 'महाराज, हमने मंत्री जी के प्राण तो निकाल लिए थे, बाकायदा पंचनामा भरा, पर जैसे ही हम बायोमेट्रिक अटेंडेंस लगाने लगे, जीव फुर्र हो गया। ' यमराज गरजे - 'तुम लोगों से एक काम भी ठीक से नहीं होता! एक जीव लाने को कहा था, वो भी खो दिया? तो अब क्या होगा? इसका तो नरक में स्पेशल पैकेज बुक है। इतने पाप हैं कि अगर हिसाब जोड़ें तो यमलोक का सर्वर ही ब्रेक हो जाए। इसे यातनाएँ देकर पाप धोने हैं और अगले जन्म में इसी के घर में कुत्ता बनाना है। ताकि सुबह-सुबह इसके ही सगे सम्बन्धी इसे डंडा मारकर भगाएँ। ' यमराज ने सिर पकड़ लिया। तुरंत आदेश हुआ - 'जाओ नारद जी को बुलाओ।' तुरंत नारद जी को बुलाया गया। नारद जी आए – चमकीली धोती, वीणा कंधे पर, इस बार वीणा के साथ एक पावर बैंक भी लटका था। गले में आईडी कार्ड, और कमर में चार्जर। यमराज बोले - 'नारद जी, याद है परसाई जी के जमाने में आपने भोलाराम का जीव कैसे ढूंढा था? फाइलों में अटका था बेचारा।' नारद समझ गए कि एक और झमेला गले पड़ने वाला है। नारद बोले - 'नारायण, नारायण। याद क्यों नहीं होगा प्रभु। पर तब और अब में जमीन-आसमान का फर्क है। ' 'क्या फर्क? ' नारद जी ने लंबी साँस ली – 'नारायण, नारायण। प्रभु, उस जमाने में काम आसान था। महाराज, तब का भोलाराम सीधा सादा आदमी था। उसका जीव सीधा रिटायरमेंट की फाइल में पेंशन के कागजों में अटका था। आज का केस मंत्री जी का है। तब डिजिटलाइजेशन नहीं था। फाइल हाथ से चलती थी। आजकल तो फाइल ही गायब है। मंत्री जी का जीव भी 'फाइल इज अंडर प्रोसेस' में अटका होगा। तब न व्हाट्सऐप था, न पोर्टल था, न 'कुछ न करने' का बोर्ड था। अब तो हर दफ्तर में एक बोर्ड लगा है – 'हम कुछ नहीं करते, फिर भी सब कुछ हमीं से होता है।' ' यमराज बोले - 'पर लाना तो पड़ेगा। इस जीव ने इतने पाप किए हैं कि चित्रगुप्त की एक्सेल शीट हँग हो रही है। इसे यातनाएँ देकर इसके पाप धोने हैं और अगले जन्म में इसी के घर में कुत्ता बनाकर भेजना है, ताकि अपने ही फेंके हुए हड्डी-बोटियों पर भौंके। ' नारद ने वीणा संभाली - 'प्रभु, एक समस्या है। पिछली बार भोलाराम के केस में मैं अपनी वीणा वहीं धरती पर दान दे आया था तब जाकर काम हुआ था। अच्छा हुआ नारायण ने दूसरी दिला दी। इस बार वीणा खो गई तो मेरा तो भजन-भक्ति का रोजगार ही ठप हो जाएगा। ' यमराज बोले – 'इसीलिए तो इस बार हमने आपके लिए विशेष व्यवस्था की है। धरती पर हमने अपना एक 'हैकर' छोड़ रखा है। वो आदमी नहीं, रोबोट है। नाम है – *यम-बॉट 2.0*। वह आपकी तरह नहीं, संदेशों को पकड़ने वाला है। वीणा का जीपीएस, आपका लाइव लोकेशन, सब उसी के पास रहेगा। मैं तब तक उन बंदों को देखता हूँ जो मीटिंग में 'कुछ न करने' का संकल्प लेकर सफल हुए हैं। ' 'नारद धरती पर उतरे। सीधे मंत्री जी की कोठी पर। देखते क्या हैं, मंत्री जी के परम अभिन्न मित्र - जो स्वयं भी मंत्री हैं - उनकी अलमारी में मुंह डाले कागज ढूंढ रहे हैं। नारद को देखकर मित्र मंत्री चौंके - ' अरे नारद जी! आप यहाँ? आप तो आजकल केवल 'नारायण, नारायण' करके रील में आते हैं। या तो टीवी डिबेट में ही दिखते थे। ' नारद - 'नारायण नारायण। मैं मंत्री जी के जीव को ढूंढने आया हूँ। चौदह दिन हो गए, कल आप लोगों ने तेरहवीं भी कर दी, पर जीव अभी तक यमलोक नहीं पहुँचा। ' मित्र मंत्री मुस्कुराए - 'जीव? यहाँ तो फाइलें भी नहीं मिलतीं, जीव क्या मिलेगा। ' नारद - 'तो आप इस समय उनकी अनुपस्थिति में क्या ढूंढ रहे हैं? कोई वसीयत? कोई स्विस बैंक की चिट? कोई वसीयत? कोई डायरी? कोई पेन ड्राइव? ' मित्र मंत्री ने इधर-उधर देखा और फुसफुसाकर कहा - 'वसीयत नहीं महाराज। मेरे बेटे के खिलाफ दस सांसदों और तीन मंत्रियों ने एक शिकायत भरी अर्जी दी थी मेरे इसी अभिन्न मित्र मंत्री जी को। बड़ा अच्छा मित्र है मेरा, पर बेटा तो बेटा है। सावधानी तो लेनी पड़ेगी। दो दिन से ढूंढ रहा हूँ, मिल ही नहीं रही। ' नारद जी ने पूछा 'क्या मृत मंत्री का परिवार, बीवी बच्चे तो होंगे? वे कहाँ हैं? ' 'कहाँ की बीवी। शादी के साल भर के अंदर पत्नी ने इन्हें छोड़ दिया। बच्चों का प्रश्न ही नहीं उठता। अकेले हैं, चले आओ कहकर कई महिलाओं को बुलाते हैं। ऐश करते हैं।' नारद समझ गए कि सारा कुछ मालूम करने का स्रोत उनका मित्र मंत्री मात्र है। नारद बोले - 'अगर मैं वह अर्जी ढूंढ दूं तो क्या आप मुझे उन-उन जगहों पर ले चलेंगे जहाँ-जहाँ मंत्री जी का आना-जाना था? ' 'बिलकुल। पक्का वादा ' नारद ने कोने में पड़े कचरे के डिब्बे की ओर इशारा किया - 'उसे उलटिए। ' डस्टबिन पलटा तो उसी में वो अर्जी कई टुकड़ों में पड़ी थी। मंत्री जी ने उसे पढ़ा ही नहीं, पहले ही फाड़ दिया था। यही तो न्याय था – पहले फैसला, बाद में सुनवाई। अर्जी मिलते ही मित्र मंत्री ने सारे टुकड़े जेब में ठूँसे – 'वाह महाराज! आप तो सीबीआई से भी तेज निकले।

चलिए, मैं आपको ले चलता हूँ। चलिए महाराज, अब मैं आपका गाइड हूँ। ' पहला पड़ाव – संसद। दोनों ने कोना-कोना छाना। झूमर में, सेंट्रल हॉल की कैंटीन में, लाइब्रेरी की उन फाइलों में जो कई वर्षों से किसी ने नहीं खोलीं। कहीं जीव नहीं। कैंटीन, लाइब्रेरी, झूमर के ऊपर।

जहाँ मंत्री जी भाषण देते समय 'देश की सेवा' कहते थे, वहाँ भी दिखा। जीव नहीं मिला। वहाँ सिर्फ भाषणों की गूँज थी। दूसरा पड़ाव – पूँजीपति मित्रों के घर। बड़े-बड़े फार्म हाउस। जहाँ मंत्री जी का बोल बाला था। वहाँ मंत्री जी की बड़ी-सी तस्वीर पर माला चढ़ी थी, नीचे लिखा था – हमारे मार्गदर्शक। यात्रा शुरू हुई पूंजीपति मित्रों के यहाँ। सात सितारा दफ्तर, फार्म हाउस, जहाँ मंत्री जी के नाम पर टेंडर पास होते थे। वहाँ जीव नहीं, सिर्फ जीव की फोटो लगी थी - 'हमारे प्रेरणा स्रोत '। जीव वहाँ भी नहीं, क्योंकि वहाँ सिर्फ पैसा बोलता था, आत्मा नहीं। रात हो गई। मित्र मंत्री बोला – 'महाराज, आज रात मंत्री जी के ही बंगले में रुक जाइए, वीआईपी भोजन का प्रबंध करता हूँ। ' नारद बोले – 'नहीं वत्स, आज रात ही जीव लेकर जाना है। नहीं तो यमराज मेरा 'परफॉर्मेंस रिव्यू' खराब कर देंगे। ' अब बारी थी गुप्त ठिकानों की। फिर वे उन गुप्त जगहों पर गए जहाँ मंत्री जी दिन के उजाले में नहीं, रात के अंधेरे में जाते थे।

पहला घर - एक महिला मंत्री का। जो लंबे अरसे से मंत्री जी के साथ 'सामाजिक सरोकार' में जुड़ी थीं। कहते थे दोनों के बीच 'विशेष संबंध' है जिसकी वजह से आज वह महिला करोड़पति है। बाहर से भजन की आवाज, अंदर से गिलासों की खनक। नारद ने अदृश्य होकर देखा - देवी जी अपने किसी और 'सहयोगी' के साथ क्रिकेट देख रही हैं। वहाँ भी जीव नहीं, सिर्फ टीआरपी थी। दूसरा गुप्त घर – एक समाज सेविका का, जो मंत्री जी के सबसे करीब थीं। बाहर बोर्ड लगा था - 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ आश्रम '। अंदर कुछ लड़कियाँ बैठी थकन कर रही थीं। तभी पिछवाड़े के दरवाजे से एक पुरुष निकला और बोला - 'अब ये भजन बंद करो और अंदर आओ, मुझे जल्दी घर जाना है।' वहाँ भी सन्नाटा। बाहर बोर्ड – सेवा ही धर्म है। नारद समझ गए, यहाँ सेवा नहीं, 'सेवा का दिखावा' चल रहा है। जीव यहाँ भी नहीं। आखिरी जगह - एक अविवाहिता सांसद का घर।

मंत्री का दोस्त बोला - 'यहाँ मंत्री जी का बहुत ज्यादा मन लगता था, आखिर सुंदर अविवाहिता जो है। यहाँ वे योजनाएँ बनाते थे। यहाँ मंत्री जी की आत्मा बसती थी। यहाँ वे भविष्य की सरकारें बनाते थे।' घर में छह सात लोग बैठे विपक्ष के नेता को नए नए गलियों से नवाजने की 'मास्टर प्लानिंग' कर रहे थे। नारद थक चुके थे। तभी उनकी नजर पिछवाड़े में रखी एक पुरानी छलनी पर पड़ी। छलनी में कुछ चमकता हुआ हिल रहा था। नारद चिल्लाए - 'मिल गया!' यम-टेक सपोर्ट रोबोट ने भी बीप बजाई - 'लोकेशन ट्रेस्ड। टारगेट फाउंड। लोकेशन कन्फर्म्ड।' छलनी में मंत्री जी का जीव सिकुड़ा बैठा था। नारद ने पूछा - 'अरे मूर्ख! हमने तुझे संसद में ढूंढा, फार्म हाउस में ढूंढा, पूंजीपति के तिजोरी में ढूंढा, तू यहाँ इस छलनी में क्या कर रहा है? ' जीव बोला – 'महाराज, यह उस हसीना कुंवारी सांसद का घर है जिसने पिछले करवा चौथ पर व्रत रखा और चाँद को देखकर मेरी लंबी उम्र की दुआ माँगी थी। जब मुझे पता चला कि एक अविवाहित होकर भी यह मुझे अपने होने वाले पति से ज्यादा मानती है, तो मेरा मन इसी छलनी में अटक गया। यहाँ मुझे वो प्रेम मिला जो संसद में, फार्म हाउस में, समाज सेविकाओं में कहीं नहीं मिला। मैं यहीं रह गया।

मैं कहीं जाना नहीं चाहता। ' तभी यमराज भी प्रकट हो गए। मित्र मंत्री ने हाथ जोड़कर कहा – 'धन्य हैं आप नारद जी! आप जैसा एक व्यक्ति अगर हमारे आयकर विभाग में आ जाए तो देश की प्रगति दिन दूनी, रात चौगुनी हो जाएगी।

आप तो छलनी में से भी जीव निकाल लाए। ' नारद ने वीणा पर जोर से टंकारा मारा - 'नारायण! नारायण। चलना तो तुम्हें पड़ेगा वत्स। प्रेम और सत्ता के नाम पर तूने जो-जो पाप भरे कारनामे किए हैं, उनका हिसाब तो यमराज के यहाँ ही होगा।

वहाँ तेरी लंबी उम्र की नहीं, तेरे पापों की गिनती होगी। ' यमराज ने जीव को छलनी सहित उठाया और बोले - 'चलो वत्स, अब तुम्हें कुत्ते के रूप में इसी घर में वापस आना है। तब यही छलनी तुम्हें रोज देखने को मिलेगी, पर चाँद देखने के लिए नहीं, रोटी ढूंढने के लिए।

डॉ टी महादेव राव

कहानी

इंतजार



सुबह हो चुकी थी।सूरज की सुनहरी किरणें वृक्षों और ,ऊंची बिल्डिंगों पर चमक रहीं थीं। परिंदें एक दिशा से दूसरी दिशा में झुंड के झुंड उड़े चले जा रहे थे।सड़कों पर भी जाग हो चुकी थी।अखबारों के हॉकर अखबार डाल रहे थे।स्कूलों बच्चे बसों में बैठ कर स्कूल जा रहे थे।पेरेंट जाते हुए बच्चों की तरफ हाथ हिलाकर उन्हें रवाना कर रहे थे।रात भर के सोए जानवर ठीक से जागे भी नहीं थे कि उनके मालिक मोटर साइकिलों पर बैठकर जानवरों पर बेदर्दी से डंडे फटकारते हुए घेर रहे थे ताकि उनका दूध निकाल कर फिर सड़कों पर उन्हें उनके हाल पर छोड़ा जा सके। मै भी मेरा मेरी फ्रेश कॉर्नर दुकान खोल चुका था।पड़ोस की होटल पर भी गरमागरम चाय की तपेली में से भांप उठ रही थी।अंदर बैठे और बाहर खड़े ग्राहक चाय के छाने जाने का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। मेरी दुकान पर भी स्कूली बच्चे बोहनी कर चुके थे।मैने मेरी कुर्सी के पास लगी घंटी बजाई ताकि मेरी बीवी चाय लेकर आ जाए। मैने देखा कि एक शख्स आकर मेरे करीब खड़ा हो गया।निगाहें मिली हमारी दुआ सलाम हुई।मैने उसे गौर से देखा।लंबा पूरा, गुलाबी चमकते रंग के उस शख्स में गजब की कशिश थी।मुझे ऐसा लगा मैं ऐसे किसी इंसान से कभी ना कभी बेहद करीब रह चुका हूं।ना जाने क्यों मुझे उसमें एक अपनापन से महसूस होने लगा। मैं यादों के गलियारों में समाने लगा और मुझे उस व्यक्ति में मेरे मरहूम वालिद की झलक नजर आने लगी।हालांकि मुझे वालिद की ऐसी याद नहीं थी कि मैं साफ - साफ बयां कर सकूं।क्योंकि उनके इंतकाल के वक्त मुश्किल से चार पांच साल का था। बस ,उसी याद के सहारे मुझे ऐसा लगने लगा कि सामने खड़ा इंसान मेरे पिताजी की कॉपी है। उस अधेड़ इंसान ने कंधे पर टंगे अपने झोले में से एक पालीथीन निकाली फिर उसे खोली जिसमें रेजगारी थी।वह बोला ', बेटा, यह साढ़े तीन सौ रुपए की रेजगारी है।तुम इनके बदले मुझे बंदे नोट देदो।' उसका बेटा कहना मुझे अंदर तक छू गया।मैं मना नहीं कर सका।मैने पालीथीन उनके हाथ से ले ली।वे बोले ', सिक्के गिन लो।' मैने कहा ', नहीं ,इसकी जरूरत नहीं।मुझे आप पर ऐतबार है।आप मेरे वालिद की तरह हैं।' ' अल्लाह तुम्हें सदा खुश रखे ', यह कह कर उसने मेरे माथे पर हाथ रख मुझे आशीर्वाद दिया।इसके बाद झोले में हाथ डाल कुछ और रेजगारी निकाली और मुझे थमाते हुए बोले ', भूल चूक लेनी देनी ,इन्हें मेरी तरफ से रखले मना मत कर करना ' उनका इसरार इतना असरदार था कि मैं मना नहीं कर सका।होटल वाले ने चाय भेजी ।हमने चाय पी ।वे चलते हुए बोले ', बेटा, अल्लाह ने चाहा तो हम दोबारा फिर मिलेंगे।' इतना कहकर वे चले गए। उस वाकिए को एक अरसा बीत चुका है।मै आज भी उनका इंतजार कर रहा हूं।जैसे एक बेटा अपने बिछड़े हुए पिता का इंतजार करता है।

रमेशचंद्र शर्मा,स्वतंत्र लेखक एवं पत्रकार 42, बहादुरगंज,उज्जैन मोबाईल 8989711959

एक अपराध-बोध

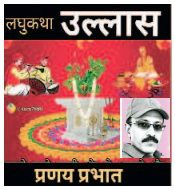

सेठ मुकुंदी लाल और उनके परिजन अत्यधिक उल्लसित थे। तीन लग्ज़री वाहनों में सवार होकर अपने कस्बे को लौटते हुए। हर्ष व गर्व का विषय था एक धर्मस्थल पर सम्पन्न कराया गया तुलसी-शालिग्राम जी का विवाह। भव्यता के साथ आयोजित इस मोटमयी कार्यक्रम पर पूरे 18 लाख का खर्चा कर लौट रहा था यह परिवार। कस्बे में प्रवेश के बाद मार्ग में पड़ने वाली कोतवाली के सामने जमा भीड़ ने कौतूहल पैदा किया। गाड़ी रोक कर पूछने पर जो कहानी सामने आई झकझोरने वाली थी। पता चला कि कस्बे के बीचों-बीच छोटी सी रेहड़ी लगाने वाले मुरारी लाल ने अपनी दोनों जवान बेटियों व पत्नी को ज़हर दे कर मारने के बाद खुद भी फांसी लगा ली। वजह थी, बड़ी बेटी का गौना और छोटी का विवाह न कर पाना। जिसके लिए वो आर्थिक रूप से सक्षम नहीं हो पा रहा था शायद। समाज और परिचितों के दिन-रात के तानों ने उसे यह हृदय-विदारक कृत्य करने के लिए उकसाया। सारी कहानी से अवगत सेठ मुकुंदी लाल और तमाम परिजनों का सारा उल्लास काफ़ूर हो चुका था। अब उनके दिल में उमंग की जगह एक अपराध-बोध सा था। शायद अमीरी ने उनकी मानवता और संवेदना को चट नहीं किया था। अब पूरे परिवार को लग रहा था कि एक तिहाई पैसा भी दो ग़रीब तुलसियों पर लगा देते तो चार जीवन बच सकते थे। साथ ही दो परिवार आबाद करने का सुख व संतोष मिल सकता था। जो कुछ देर पहले वाले से कहीं बढ़ा होता।।

प्रणय प्रभात (मध्यप्रदेश)

आओ डॉक्टर डॉक्टर खेलें

व्यंग्य

तीसरी आँख



बचपन में तरह-तरह के खेल हम खेला करते थे। उसमें से एक खेल था डॉक्टर बनकर अस्पताल खोलकर मरीज बनकर आए साथी का इलाज करना। मुझे याद है मैं तो अलग-अलग रंगो को घोलकर कांच की छोटी छोटी शीशियों में रखता था। दीवारों में जहां पर छोटे छोटे छेद होते थे वहां पर जिस रंग की दीवार हो उसी रंग की दवा भरी शीशी में रुई के फोहे को डुबा कर उसे छेद में भर देता था। मुझे लगता था कि मैंने दीवार की घाव को दूर कर दिया है। इतनी आसानी से मैं डॉक्टर बन जाता था।खुशी के मारे फूलकर गुब्बारा बन जाता था। आजकल और भी सहजता से लोग डॉक्टर बन जा रहे हैं। ए लोग चिकित्सा के नहीं बल्कि कला-संस्कृति -साहित्य क्षेत्र के डॉक्टर बन रहे हैं। अपने नाम के आगे डॉक्टर लगाने की नशा में डूबे हुए लोगों की ना समझी का फायदा अनेक फर्जी संस्थान और यूनिवर्सिटी वाले भरपूर उठा रहे हैं। ना जाने कितने रुपए लेकर ऐसे महत्वाकांक्षी मूढ़ लोगों को डिलीट की उपाधि दे रहे हैं,जिन्हें ना तो बोलने का सहूर है, ना लिखने का और ना ही अन्य किसी दृष्टि से वे योग्य है। आजकल किसी साहित्यिक- सांस्कृतिक कार्यक्रम में जाओ तो मंच से लेकर दर्शक दीर्घा में बैठे लोग डॉक्टर ही डॉक्टर नजर आते हैं। अब तो ऐसा लगने लगा है कि जिसके नाम के आगे डॉक्टर नहीं है असल अकलमंद वही है। यही बदहाली पुरस्कार और सम्मान के मामले में भी है। छद्म पुरस्कारों के नाम ऐसे भारी भरकम रखे जाते हैं कि इसे लेने (खरीदने)वाले का सीना छप्पन इंच से दुगना हो जाता है। मुझे पिछले दिनों शहर के एक तथाकथित स्वयंभू साहित्यकार के निवास निवास में जाने का अवसर मिला। उनके घर की दीवार पर सम्मान प्रशस्ति पत्र पेपरवॉल की तरह लगे हुए थे। जैसे वहां दीवार पर बने डिजाइन हों। गीत गोविंद महासागर, साहित्य सरोवर, श्रेष्ठ सरस्वती पुत्र, कलम सम्राट, साहित्य शिखर पुरुष, जैसे सम्मान प्राप्त श्री साहित्यकार के घर जितनी देर बैठा रहा उतनी देर तक कला-साहित्य जगत में बढ़ रही सड़ांध को मेरे संवेदनशील नासिकाओं ने बमुश्किल बर्दाश्त किया। मुझे यह बात भी समझ में आ गयी कि इसी वजह से इन दोनों समाचार पत्रों ने भी डॉक्टरेट और सम्मान पुरस्कारों से संबंधित समाचारों को छापना बंद कर दिया है या फिर बाकायदा राशि फीस लेकर उसे विज्ञापन समाचार के रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। डॉक्टरेट लेने वाले लोग शायद सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, कबीर दास रहीम, मुंशी प्रेमचंद, रसखान, जैसे महान विभूतियां को पीछे छोड़ दिए हैं। ऐसे लोग अपने काम से जाने जाते हैं लेकिन आजकल लोग अपने फर्जी कुकर्मों से जाने जाते हैं और गौरवान्वित होते हैं। डॉक्टरेट होने के बाद महान हो जाने के भ्रम में जीते हुए ऐसे लोगों को देखते हुए बुजुर्गों की कही हुई बात याद आ रही है कि- *जब तक दुनिया में नासमझ मूर्ख लोग जिंदा है तब तक चालाक चतुर लोग का पेट और जेब लबालब भरा रहेगा।

विजय मिश्रा 'अमित' अग्रोहा कालोनी रायपुर (छग) 492013 मो.9893123310